प्रेमचंद के साहित्य में जनभाषा की सांस्कृतिक पहचान

डी.एम. मुल्ला

एसोसिएट प्रोफेसर और अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मराठा मंडल कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा गृहविज्ञान महाविद्यालय तथा स्नातकोत्तर केंद्र एम.कॉम. और एम.एस्सी. (केमिस्ट्री) बेलागावी ।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263434

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध-पत्र हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित कथाकार प्रेमचंद के साहित्य में प्रयुक्त जनभाषा की सांस्कृतिक पहचान का गहन विश्लेषण करता है। प्रेमचंद ने साहित्य को केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर, उसे यथार्थ और आदर्शवाद की धरती से जोड़ा। उनकी भाषा, जो हिंदी और उर्दू का सहज, सरल मिश्रण है और जिसे हिंदुस्तानी भी कहा जाता है, ने उन्हें सीधे आम जनता से जोड़ा। महात्मा गांधी के जनभाषा संबंधी विचारों से प्रेरित होकर, उन्होंने अपनी कृतियों में ग्रामीण मुहावरों, लोकोक्तियों और जनसाधारण की बोलचाल का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया। 'गोदान', 'प्रेमाश्रम' और 'रंगभूमि' जैसे उपन्यासों के माध्यम से, लेखक ने यह दर्शाया कि कैसे पात्रों की भाषा उनकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति के यथार्थ को दर्शाती है। निष्कर्ष यह है कि प्रेमचंद की जनभाषा समकालीन भारतीय समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और धरोहर की प्रमाणिक पहचान है।

KEYWORDS:

प्रेमचंद, जनभाषा, हिंदुस्तानी, सांस्कृतिक पहचान, यथार्थवाद.

प्रस्तावना:

हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार और साहित्यकार के रूप में ख्याति प्राप्त लेखक प्रेमचंद का नाम हिंदी साहित्य का अमूल्य नाम है। प्रेमचंद ही एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की पहचान अपने युग से करवायी। प्रेमचंद के पूर्व के लेखक केवल जासूसी, ऐय्यासी, तिलस्मी और मनोरंजन का साहित्य लिखते थे।

लेकिन प्रेमचंद के युग से साहित्य यथार्थ की धरती से जुड़ने लगा। जिससे भारतीयता, जनमानस और उनकी भाषा का संबंध सीधे जनता से जुड़ गया। यथार्थवाद के साथ आदर्शवाद की असली पहचान करवाने के सक्षम हस्ताक्षर प्रेमचंद को ही माना जाता है।

प्रेमचंद की भाषा में हिंदी और उर्दू का मिलाजुला भाषाई संगम देखने को मिलता है। प्रेमचंद की प्रसिद्धि का कारण ही उनकी सहज, सरल जनभाषा बनी रही। जनता के भीतर बोली जाने वाली भाषा, ग्रामीण मुहावरे, लोकोक्तियां तथा सूक्तियों का प्रयोग वे अपनी भाषा में कर साहित्य को जनमानस से जोड़ने के साथसाथ जनमानस की भाषा और संस्कृति की पहचान बनाने में सक्षम बनी। प्रेमचंद की कहानियां और उपन्यास केवल कथ्य के कारण प्रसिद्ध नहीं हुए बल्कि उनकी कथा कहने की कला भी महत्वपूर्ण थी, इस कारण प्रेमचंद का साहित्य लोकप्रियता का कारण बना। उनकी भाषा में काव्यात्मकता और सर्जनात्मक तत्व शामिल थे।

प्रेमचंद साहित्य और जनभाषा का सांस्कृतिक अध्ययन:

प्रेमचंद के साहित्य का संबंध सीधेसीधे हिंदुस्तानी भाषा से था। हिंदी और उर्दू भाषा का ठेठ मिलन उनके साहित्य की जान रही। गांधीजी ने हिंदुस्तानी नाम इसलिए सुझाया था कि, हिंदी और उर्दू भाषा जनमानस की भाषाएं मानी गई। जो भाषा जनता के बीच बोली जाती और समझी जाती थी। गांधीजी जनभाषा के सहारे ही आजादी की लड़ाई हिंदूमुस्लिमसिखईसाई आदि के पारस्परिक सौहार्द से लड़ी। वैसे ही प्रेमचंद भी भारत के विविध जाति और उनके बीच बोली जाने वाली हिंदीउर्दू अर्थात हिंदुस्तानी भाषा को अपनी लेखनी का साधन बनाया। प्रेमचंद भाषा के संबंध में ऐसा मानते थे कि, हमारी सही भाषा वही है जो सर्वमान्य, बोधगम्य हो जिसे समाज का प्रत्येक व्यक्ति सहजता से आत्मसात कर सके। प्रेमचंद इसलिए हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग साहित्यिक रूप में किया। भाषा के सहारे ही लेखक जनमानस तक पहुँच कर उसकी रुचि, उसका हित, उसकी समस्या आदि को दिखाने का प्रयास करता है। इस संदर्भ में हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार केदारनाथ अग्रवाल कहते हैं, "लेखक जनता का आदमी है, जनता में रहता है और जनता के लिए लिखता है। अतःएव जिस बात में जनता का हित है, उसमें लेखक

का हित है, जिस बात में जनता की प्रगति है, उसमें लेखक की प्रगति है। दोनों एक ही समाज के प्राणी हैं। दोनों की एक ही समस्याएं हैं और दोनों का एक ही लक्ष्य है।" (1) प्रेमचंद का साहित्य भी जनता का जनता के लिए बना रहा इसलिए प्रेमचंद जनता और उनकी संस्कृति की पहचान साहित्य में करवाने का प्रयास किया।

प्रेमचंद अतिभाषावाद से बचकर अपने साहित्य में अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया। लेकिन विशेष रूप से वे हिंदीउर्दू भाषा क्षेत्र को अपने साहित्य में संतुलित रूप देने का प्रयास किया। प्रेमचंद की गद्यशैली को जनशैली ही कहा जा सकता है। जनशैली भाषा की पहचान ही सही रूप में समकालीन भारतीय संस्कृति की पहचान मानी जा सकती है। भाषा की दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यास में प्राप्त पात्र जिनमें हिंदू पात्र तत्सम प्रधान हिंदी बोलते हैं, तो मुसलमान पात्र उर्दू प्रधान हिंदी बोलते हैं।

"प्रेमाश्रम" उपन्यास के मुस्लिम पात्र गौस खान की भाषा जनमानस की बोलचाल की भाषा है। वह कहता है, "हुजूर का फरमाना बहुत दुरुस्त है। आप खानदान से सरपरस्त और मुरब्बी हैं। आपके मंसब से किसे इनकार हो सकता है।" (2) वही "प्रेमाश्रम" के मनोहर के द्वारा हाकीम को रिश्वत देने के विरोध में सुक्खु से कहते हैं "हमीं लोग तो रिश्वत देकर आदत बिगाड़ देते हैं। हम न दें तो वह कैसे पाए? बुरे तो हम हैं। लेनेवाला मिलता हुआ धन थोड़े ही छोड़ देगा। यहां तो आपस में ही एक दूसरे को खा जाते हैं। तुम हमें लूटने को तैयार हम तुम्हें लूटने को तैयार। इसका और क्या फल होगा।" (3) प्रेमचंद के ग्रामीण पात्र "प्रेमाश्रम" में तद्भव और अंग्रेजी के विकृत शब्दों का प्रयोग करते हैं। शिक्षित पात्र तत्सम शब्दों का प्रचलित रूप अपनाते हैं। "प्रेमाश्रम" उपन्यास हिंदी और उर्दू भाषाओं का मिश्रित रूप है, जो जनता की बोधगम्य भाषा का प्रयोग है। प्रेमचंद का उपन्यास "सेवासदन" भी जनभाषा का हिंदुस्तानी भाषा का ही जीता जागता उदाहरण है। इस उपन्यास में रसपूर्ण भाषा प्रयोग कुछ पात्रों के माध्यम से दिखाई पड़ती है। तो इसके विपरीत शुष्क और नीरस भाषा भी उपन्यास की यथार्थ पात्र परिस्थिति को दर्शाती है। इसमें मदन सिंह शुष्क तथा नीरस भाषा का प्रयोग गांव की बारात के वक्त कर बैठता है जिससे पूरा दृश्य मूर्तिमान हो उठता है। वह कहता है "बारात जनवासे को चली, रसम का सामान

बंटने लगा। चारों ओर कोलाहल होने लगा। कोई कहता था मुझे घी कम मिला कोई गुहार लगाता था कि मुझे उपले नहीं दिए गए। लाला बैजनाथ शराब के लिए जिद कर रहे थे।" (4) तो मदन सिंह का वकील भाई पं. पदमसिंह की भाषा का उदाहरण इस प्रकार से है "भैया, ईश्वर के लिए आप मेरे संबंध में ऐसा विचार न करें। यदि मेरे प्राण भी आपके काम आ सकें तो मुझे आपत्ति न होगी। मुझे यह हार्दिक अभिलाषा रहती है कि आपकी कोई सेवा कर सकूँ।" (5) संतुलन और समन्वय भाषा का प्रयोग प्रेमचंद अपने पात्रों के माध्यम से करवाते थे, जिससे पात्रों की मानसिकता की पहचान हो जाती थी।

प्रेमचंद अपने विकासशील उपन्यास "रंगभूमि" में अधिकतर बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। जिससे भाषा में अधिक सजीवता जान पड़ती है। उपन्यास का पात्र अपने दार्शनिक विचारों को जनभाषा के रूप में कहता है, "सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं। बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्का सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं। उनकी त्योरियों पर बल नहीं पड़ता, हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे नहीं आते। न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं, खेल रोना कैसा। खेल हंसने के लिए है, दिल बहलाने के लिए है।" (6)

"निर्मला" उपन्यास की भाषा ठेठ हिंदुस्तानी भाषा जो एक ही वर्ग से संबंधित होने के कारण जन भाषा ही प्रस्तुत होती है। "निर्मला" उपन्यास में सीधीसादी कथा को सीधेसाधे ढंग से साधारण भाषा में प्रस्तुत किया गया है। (7)

"कर्मभूमि" उपन्यास में शिक्षित और जनभाषा आदि का सामाजिक रूप देखने को मिलता है। प्रो. शांति कुमार राजनीतिक चेतना की मुखर भाषा का उपयोग करते हुए कहता है "गवर्नमेंट तो कोई चीज नहीं। पढ़ेलिखे आदमियों ने गरीबों को दबाए रखने के लिए एक संगठन बना लिया है। उसी का नाम गवर्नमेंट है। गरीब और अमीर का फर्क मिटा दो और गवर्नमेंट का खात्मा हो जाता है।" (8) विशेष रूप से प्रेमचंद में शिक्षित और जनभाषा का समन्वय रूप व्यवहारिकता के चलन में देखा जा सकता है।

प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास "गोदान" को भाषा विभाजन का उपन्यास कहा जा सकता है। इसमें ग्रामीण कथा और शहरी कथा तथा

उससे जुड़े पात्रों की भाषा में अंतर देखा जा सकता है। लेकिन लेखक ने अपने पात्रों के भाषा प्रयोग के प्रति सादगी और सहज अभिव्यक्ति रखी है। इस उपन्यास में पात्रों का चरित्रचित्रण प्रेमचंद की सहज भाषा कला अभिव्यक्ति के फलस्वरूप मानसिक तथा सामाजिक स्थिति को बताती है "सोना उम्र से किशोरी, देह गठन से युवती और बुद्धि से बालिका थी, जैसे उसका यौवन उसे आगे खींचता था, बालपन पीछे। लंबा रुखा किंतु प्रसन्न मुख, ठुडी नीचे को खींची हुई, आँखों में एक प्रकार की तृप्ति, न केश में तेल, न आँखों में काजल, न देह पर कोई आभूषण, जैसे गृहस्थी के भार ने यौवन को दबा दिया हो।" (9) इसी उपन्यास में गाय के मरने पर धनिया हरी से कहती है, "धनिया आवेश में बोली, अनर्थ नहीं, अनर्थ का बाप हो जाये। मैं बिना लाल को बड़े घर भिजवाने से मानूंगी नहीं। तीन साल चक्की पिसवाऊंगी, तीन साल। वहां से छूटेंगे तो हत्या लगेगी। तीरथ करना पड़ेगा। भोज देना पड़ेगा। इस धोखे में न रहे लाला! और गवाही दिलवाऊंगी तुमसे, बेटे के सिर पर हाथ रखकर।" (10)

इसी उपन्यास में दुलारी सहुआइन की भाषा का उदाहरण द्रष्टव्य है "बाकी बड़ी बोलदराज औरत है भाई। मर्द के मुंह लगती है। होरी ही जैसा मरद है कि इसका निभाह होता है। दूसरा मरद होता तो एक दिन न पटती।" (11)

इस प्रकार लेखक प्रेमचंद ने अपनी कथा साहित्य के अंतर्गत अत्यंत मार्मिकता से भाषा का प्रयोग किया है। जिससे तनाव आदि सक्षमता से दिखाई पड़ता है। पात्रों की सामाजिक, मानसिक आदि स्थिति का यथार्थ रूप से चित्रण देखने को मिलता है जो प्रेमचंद की भाषा में निहित है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, प्रेमचंद की भाषा जनभाषा थी। जो हिंदी और उर्दू से मिश्रित हिंदुस्तानी भाषा थी। अपने कथा साहित्य में प्रेमचंद जनसाधारण की भाषा का प्रयोग किया जिसके कारण जनसाधारण की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक स्थिति का चित्रण सहजता से जनभाषा के माध्यम से किया। जिसके कारण समकालीन पात्रों का सांस्कृतिक मूल्यों का चरित्रचित्रण भारतीय ग्रामीण और शहरी वातावरण की मानसिक धरोहर की पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. समयसमय पर श्री केदारनाथ अग्रवाल पृष्ठ संख्या 177, परिमल प्रकाशन दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2021
2. प्रेमाश्रम प्रेमचंद पृष्ठ संख्या 03, भारतीय साहित्य संग्रह प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2014
3. वही पृष्ठ संख्या 20
4. सेवासदन प्रेमचंद पृष्ठ संख्या 189, प्रभात प्रकाशन पटना, प्रकाशन वर्ष 2016
5. वही पृष्ठ संख्या 05
6. रंगभूमि प्रेमचंद पृष्ठ संख्या 129 फिंगरप्रिंट पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष
7. प्रेमचंद और उनके उपन्यास डॉ. उषा ऋषि पृष्ठ संख्या 164 पृथ्वीराज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 1974
8. कर्मभूमि प्रेमचंद पृष्ठ संख्या 220 नई सदी बुक हाउस, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015
9. गोदान प्रेमचंद पृष्ठ संख्या 36 नई सदी बुक हाउस, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2016
10. वही पृष्ठ संख्या 111
11. वही पृष्ठ संख्या 45

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.